INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in July 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

गुप्तकाल के मन्दिरों की शैली एवं वास्तुकला : एक ऐतिहासिक अध्ययन

सुनील कुमार तिवारी, शोधार्थी, इतिहास विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)
डॉ. अवनीश कुमार मिश्र, सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

प्राचीनकाल से ही भारत धर्म और संस्कृति का केन्द्र रहा है। सदियों से यहां विभिन्न रूपों में पूजा–अर्चना होती आ रही है। सिन्धु सभ्यता से प्राप्त मूर्तियों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत में प्रारम्भिक पूजा मूर्ति पूजा के रूप में प्रचलित हुई और बाद में मन्दिर निर्माण परम्परा शुरू हुई। मनुष्य ने अपनी आस्था और विश्वास को प्रकट करने के लिए देवी–देवताओं की मूर्तियों का निर्माण प्रारम्भ किया था। इन देवी – देवताओं की मूर्तियों को प्रतिष्ठित करने के लिए भवनों का निर्माण किया गया, जिन्हें मन्दिर का नाम दिया गया।

भारत मन्दिरों का देश कहा जाता है। मन्दिर भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के महत्वपूर्ण केन्द्र माने गये हैं। उन्हें भारतीय वास्तुकला का प्रमुख अंग माना गया है। मन्दिर मुख्यतः धार्मिक वास्तु हैं, जिसे हम भारतीय वास्तुकला की एकमात्र विभूति कहें तो यह अतिशोक्ति नहीं होगी। मन्दिर उपासना के स्थलत्र एवं उपादान दोनों रूपों में प्रयुक्त होते हैं। मन्दिरों की परिक्रमा न मात्र मन्दिर में स्थापित मूर्ति वरन् मन्दिर की पूजा की ओर भी इंगित करती है। अतः मन्दिर उतने ही प्राचीन कहे जा सकते हैं जितनी मूर्ति पूजा।

मन्दिर वास्तु की अवधारणा उसके धार्मिक स्वरूप में निहित है । मन्दिर का विकास वास्तु के रूप में हुआ है। मन्दिर उस अदृश्य देवता का दृश्य स्वरूप होता है जिसकी मूर्ति मन्दिर में प्रतिष्ठित होती है। मन्दिर स्वयं मूर्ति की भाँति उपास्य है, वह मानव शरीर है, भक्तगण उसकी परिक्रमा करते हैं। उसके प्रतिष्ठित मूर्ति अदृश्य आत्मा का प्रतीक होती है जिसके समक्ष भक्तगण ध्यानस्थ होते हैं जिस प्रकार मानव शरीर में आत्मा होती है उसी प्रकार मानव शरीर रूपी मन्दिर में मूर्ति रूपी आत्मा निवास करती है। इसलिए मन्दिर को पुरूष कहा जाता है। मनुष्य के शरीर के विभिन्न अंगों के नाम पाद से लेकर शिखर तक के अनुरूप ही मन्दिर के अंगों का नामकरण किया जाता है। इसलिए मन्दिर के विभिन्न अंग पुरुष – अंगों के समान कल्पित किए गए हैं– जैसे चरण – चौकी (अधिष्ठान या चबूतरा), पाद, जंघा, कटि, वक्ष, स्कन्द, ग्रीवा, ललाट, मुख, नासिका, शिखा (शिखर)। हिन्दुओं के मन्दिर उस देवता का स्थान है, जो विश्व की अंतरात्मा है। इसलिए मन्दिर को देवालय, शिवालय, देवायतन जैसे शब्दों से जाना जाता है। मन्दिर में पूजा का प्रारम्भ तभी से किया जाता है, जबकि गर्भगृह में देवप्रतिमा को प्राण प्रतिष्ठा करके स्थापित कर दिया जाये।[1]

मन्दिर को राजराज भी कहा गया है। इसलिए राजा के आसन, पादपीठ, छत्र, राजगृह (गर्भगृह), गूढगृह, सभागृह, परकोटे तथा राज–वन्दना (देवोपासना) की परम्परा मन्दिरों से जुड़ गई है।

भारत में मन्दिर निर्माण कब शुरू हुआ यह कहना अत्याधिक कठिन क्योंकि प्रारम्भिक संरचनात्मक मन्दिर के उदाहरण अग्र है। परम्परा में हमें वर्तमान समय में सर्वप्रथम उदाहरण वेरोट के है। यह राजस्थान के जयपुर जिले में पाया गया मौर्यकालीन मन्दिर है, जो ईंट तथा लकड़ी से निर्मित है। मन्दिर निर्माण का दूसरा उदाहरण साँची से मिलता है, जो मौर्यकालीन है। यह मन्दिर भी पत्थर तथा लकड़ी द्वारा निर्मित है। इसके अतिरिक्त एक अर्धवृत्ताकार मन्दिर नागार्जुकोंडा (जिला गुटूर) में मिला। इसके अतिरिक्त कुछ बौद्ध व शैव मन्दिर भी प्राप्त हुए है तथा साथ ही शिव तथा कार्तिकेय की पूजा के लिए समर्पित पाये गये है।[2]

सर्वप्रथम हमें गुप्त काल में ही ऐसे मन्दिर उपलब्ध होते है जिनके वास्तुगत स्वरूप का विवेचन किया जा सकता है। पक्की ईंटों तथा पाषाण से निर्मित गुप्त मन्दिर विकास की विभिन्न अवस्थाओं के द्योतक है। इन मन्दिरों से यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि यह परम्परा गुप्तों के पूर्व से ही प्रचलित थी किन्तु गुप्तों में ही उसे स्थायित्व प्रदान किया। इस समय तक मन्दिरों पर शिखर का भी निर्माण किया जाने लगा था। गर्भगृह के समक्ष स्तम्भों पर टिका बरामदा बनाया गया, जिसमें भक्तगण एकत्रित होते थे, इसे श्मण्डप कहा गया। बाद में मण्डप के समक्ष एक अन्य लघु आयताकार बरामदा बनाया गया जिसे अर्द्धमण्डप और विकसित युग में गर्भगृह एवं मण्डप के पृथक बनाकर दोनों को जोड़ता हुआ एक अंग बना जिसे अन्तराल कहा गया। गर्भगृह के चतुर्दिक उसकी परिक्रमा के लिए बरामदों का निर्माण किया गया जिसे प्रदक्षिणापथ कहा गया। इस प्रकार गर्भगृह, अन्तराल, मण्डप, अर्द्धमण्डप तथा प्रदक्षिणापथ मन्दिर वास्तु के प्रमुख आधार अंग बने जिनकी अधिकांश विशेषताएँ गुप्त मन्दिरों में प्राप्त होती है।[3]

गुप्तकालीन मन्दिर मुख्यतया विशेष शैली के होते है। द्वारों का अलंकरण युक्त होना, दोनों द्वार स्तम्भों पर मकरारूढ़ गंगा और कच्छपारूढ़ यमुना का तक्षण होना, स्तम्भों पर मंगलकलश आदि का संयोजन होना, ऊपर की सरदल के मध्य में मुख्य देवता की प्रतिमा तथा अगल–बगल में अन्य देवताओं का अंकन होना, परवर्ती मन्दिरों की सामान्य विशेषताएँ है। प्रारम्भिक मन्दिर सादे थे, जिनमें साँची का मन्दिर, तिगवा का मन्दिर, एरण का मन्दिर तथा वराह मन्दिर मुख्य है परन्तु परवर्ती मन्दिरों में अलंकरण की प्रवृत्ति भी विकसित हुई। नाचना का पार्वती मन्दिर तथा भूमरा का शिव मन्दिर इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है।[4]

गुप्तकालीन मन्दिरों में चतुष्कोणीय गर्भगृह के ऊपर शिखर का निर्माण भी प्रचलित हुआ उत्तर भारतीय शैली के शिखरों वाले मन्दिरों की स्वर्णिम परम्परा में झाँसी जिले के देवगढ़ गाँव का दशावतार मन्दिर तथा कानपुर जिले के भीतर गाँव का ईंटों का मन्दिर शिखर मन्दिर के प्राचीनतम रूप को प्रस्तुत करते हैं।[5] जब उत्तर भारत मन्दिर स्थापत्य कला का विकास हुआ और उत्तर भारत में भूमरा का शिव मन्दिर, नाचना का पार्वती मन्दिर, सिरपुर का लक्ष्मण मन्दिर, देवगढ़ का दशावतार मन्दिर, भीतर गाँव का मन्दिर, मंदसौर का सूर्य मन्दिर, गया का महाबोधि मन्दिर, तिगवा का विष्णु मन्दिर, एरण का विष्णु मन्दिर, कोणार्क का सूर्य मन्दिर, भुवनेश्वर का लिंगराज मन्दिर, खजुराहो का मन्दिर ग्रुप, माउंट आबू के जैन मन्दिर, ग्वालियर का तेली मन्दिर व सास–बहू, का मन्दिर, जोधपुर का सूर्य मन्दिर जगत (उदयपुर) का अंबिकामाता मन्दिर, मोढेरा का मन्दिर, कश्मीर का मार्तण्ड मन्दिर इत्यादि का निर्माण हुआ, ठीक उसी समय दक्षिण भारत में मन्दिर निर्माण की विभिन्न शैलियों का जन्म हो रहा था। उन्हीं शैलियों के आधार पर दक्षिण भारत में विभिन्न मन्दिरों का निर्माण हुआ स्थापत्य कला के क्षेत्र में दक्षिण भारत में जो विकास हुआ, वह आश्चर्यजनक तथा अद्भुत था ऐलोरा का कैलाश

मन्दिर, तंजौर का वृहदेश्वर मन्दिर, गंगैकोंडचोलपुरम् का मन्दिर आदि दक्षिण भारतीय मन्दिर स्थापत्य कला के सर्वोत्तम उदाहरण है तथा मन्दिर स्थापत्य कला के विकसित स्वरूप है।

गुप्तकालीन मन्दिरों गुप्तकालीन मन्दिरों की विशेषतायें –

1. गुप्त मन्दिरों की स्थापना एक ऊँचे चबूतरे पर होती थी, जिसे जगती कहा जाता था।
2. मन्दिर पर ऊपर चढ़ने के लिए चारों ओर सीढ़ियों का निर्माण किया जाता था।
3. अधिकांश मन्दिर दीवार से घिरा कमरा होता था।
4. मन्दिरों के दीवारों की बाहरी सतह सादी होती थी।[6]
5. प्रारम्भिक मन्दिरों की छतें समतल अथवा सपाट है, किन्तु बाद के मन्दिरों में शिखर भी होता था। प्रारम्भ में यह शिखर छोटा बनता था किन्तु बाद में मूर्ति प्रकोष्ठ के ऊपर ऊँचे शिखरों का निर्माण आरम्भ हो गया।
6. मन्दिर के अन्दर एक गर्भगृह होता था जिसमें देवी–देवताओं की मूर्ति स्थापित की जाती थी।
7. गर्भगृह के सामने एक मण्डप होता था। मण्डप तीन ओर से खुले बनाये जाते थे। मण्डप की धरणी बाहर की ओर एक छज्जे के रूप मन्दिर में निकली होती थी।
8. प्रवेशद्वार एक से अधिक शाखाओं से सज्जित होते थे।
9. प्रवेश द्वार की धरणियाँ अपने विस्तार क्षेत्र से दोनों ओर लम्बवत् निकाली गयी थी
10. प्रवेश द्वार पर धरणी के मध्य भाग को एक चौड़े मस्तक या ललाट बिम्ब से सज्जित किया जाता था, जिसमें देवी–देवताओं विशेष रूप से विष्णु के विभिन्न रूपों का अंकन होता था ।
11. प्रवेश द्वार पर नदी देवियों गंगा एवं यमुना की अंकन होता था। माना जाता है कि गुप्तों ने अपने राज्य का प्रारम्भ गंगा–यमुना के मैदानी क्षेत्र से किया था। अतः प्रवेश द्वार पर गंगा एवं यमुना का अंकन उनकी अधिसत्ता का सूचक माना जाता

WIKIPEDIA
The Free Encyclopedia

गुप्तकालीन प्रमुख मन्दिर

1. भीतर गाँव का विष्णु मन्दिर –

भीतर गाँव का विष्णु मन्दिर उत्तर प्रदेश के कानपुर जनपद में भीतरगाँव नाम स्थान पर स्थित है। यह मन्दिर ईंटों और मिट्टी द्वारा निर्मित मन्दिर है। भीतर गाँव का ईंटों का यह मन्दिर देवगढ़ के मन्दिर के बाद निर्मित हुआ था। यह मन्दिर पाँचवी शताब्दी के अन्त में बनाया गया था।[7]

यह मन्दिर एक ऊँची जगती पर स्थित है। जिसके ऊपर क्रमशः घटते हुए तलों वाला कोणाकार है यह योजना में त्रिरथ है जिसमें तीन तरफ प्रमुख केन्द्रीय शैलबाहु है मन्दिर में एक गर्भगृह और विमुख कक्ष है जिसका माप क्रमशरू 4.57 मीटर और 2.14 मीटर है और जो एक दीर्घयत मार्ग से जुड़ा हुआ है।[8] गर्भगृह और विमुख कक्ष में पट्टेदार छत हैं जो गुंबदाकार है पादक के उपान काफी स्पष्ट हैं। जंघा अलंकृत भिति– स्तंभों के मध्य आलों में स्थित बृहद् मूर्तियों से युक्त है तथा दो प्रमुख कार्णिस के मध्य मृणपट्टिका की पंक्ति से आवृत्त है। मृण्मय मूर्तियाँ तथा कार्णिस का निचला भाग भौतिक तथा उभय विषयों का प्रदर्शन करती है। धार्मिक दृश्य गणेश, आदिवराह, महिषासुरमर्दिनी, गंगा तथा सीता के अपहरण से संबद्ध कथाएं तथा नरनारायण की तपस्या, दैवीय मंत्रीगण तथा वामन आकृतियों से संबंधित है। मानव तथा पशु आकृतियाँ, काल्पनिक पक्षी बेल–बूटे तथा अन्य अलंकृत कलाकृतियाँ संपूर्ण सज्जा में वृद्धि करती है। मन्दिर का आंशिक रूप में सुरक्षित शिखर कोणस्तूपाकार है। यह चौत्यगवाक्षों के मध्यारोपित तलों से वेष्टित है, जिसमें विभिन्न प्रकार के सिर या धड़ या सामान्यतया पूर्ण मानव आकृतियाँ हैं।[9] भीतर गाँव के मन्दिर में वर्गाकार गर्भगृह, वर्गाकार मण्डप तथा दोनों को जोड़ते हुए लघु अन्तराल प्रमुख अंग है मण्डप के ऊपर कुछ उमड़ी छत है किन्तु गर्भगृह एवं अन्तराल गुम्बदाकार है। गर्भगृह की तीन ओर की दीवारों का मध्य भाग कुछ बाहर निकला है। दीवारों में अनेक लहरें तथा मृण्मूर्ति पट्टियाँ हैं। दीवार के शीर्ष भाग पर दोहरे छज्जे हैं जिनसे गर्भगृह की लम्बवत दीवार एवं शिखर विभाजित होते हैं। शिखर हर एक इंच पर ऊपर क्रमशरू पतला होता गया है। दीवारों के मध्य का बाहर निकला भाग दीवार के पश्चात् शिखर में काफी ऊँचाई तक गया है। शीर्ष भाग खण्डित होने के कारण यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि यह शीर्ष तक गया था या नहीं। सम्भवतः इस मन्दिर के शीर्ष भाग पर आमलक एवं कलश रहे हों।[10]

2. बोध गया का बुद्ध मन्दिर

यह मन्दिर बिहार के बोधगया से प्राप्त हुआ है, जिसका पुनर्निर्माण अनेक बार किया गया। मूलरूप से यह मन्दिर गुप्तकालीन माना जाता है। यह ईंटों से निर्मित है। वर्तमान बोधगया में जो महाबोधि मन्दिर है उसका वह रूप है जो उसे ग्यारहवीं शती ई० में वर्मा के बौद्ध धर्मावलम्बियों ने जीर्णोद्वार कर प्रदान किया। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने देखा भी इस मन्दिर को देखा था। उसका कहना है कि यह मन्दिर 160 से 170 फीट ऊँचा था और नीचे इसकी चौड़ाई पचास फीट के लगभग थी यह नील छोड़ रंग की ईंटों से बना है, जिस पर प्लास्टर किया हुआ है और उसमें रथिकाओं की अनेक पाते, जिनमें बुद्ध की चमकती मूर्तियाँ थी। यह मन्दिर वास्तु की दृष्टि से बहुत कुछ भीतर गाँव के मन्दिर के सदृश्य है क्योंकि दोनों ही के शिखरों के किनारे सीधे हैं। इसी प्रकार दोनों में चारों ओर रथिकाओं (गवाक्ष) की पंक्तियां थी और दोनों में ऊपर कमरे थे तथा दोनों के द्वार के सिरे वृत्ताकार थे। बोध गया के मन्दिर का प्राचीन नाम बज्रासन गन्ध कुटी प्रसाद है यह नौ खण्डों का मीनार सदृश्य है हर खण्ड में आमलक के कोने बने है। शिखर के नीचे के भाग में प्रवेश द्वार के ऊपर लम्बी पतली खिड़की है। मुख्य मन्दिर के बाद निर्मित एक मण्डप पूर्व की ओर है। इस मन्दिर के चारों ओर प्रदक्षिणापथ मार्ग स्थित है। सारा प्रदक्षिणा मार्ग चबूतरे पर ही स्थित है। पश्चिमी सिरे पर बोधि वृक्ष खड़ा है। मन्दिर का गर्भगृह बारह से 49X47 फीट और अन्दर से 20X13 फीट नाप का है।[11] गर्भगृह दो मंजिला है अन्दर के सभी वास्तु अंग शाला प्रकार के अभिकल्पों से सज्जित है। महाबोधि मन्दिर का शिखर शंकुवाकार है यह सात तलों में निबद्ध है। प्रत्येक तल पर कर्ण (कोने) में एक आमलक अभिकल्प बना गया है। शिखर के चारों ओर चन्द्रशालाएँ औश्र कुलिकाएँ बनी हैं इस मन्दिर के चारों कोनों पर चार छोटे शिखर निर्मित किये गये है।

ADVANCED SCIENCE INDEX

3. सिरपुर का लक्ष्मण मन्दिर

सिरपुर का लक्ष्मण मन्दिर मध्य प्रदेश के रायपुर जिले में स्थित है। यह मन्दिर सातवीं सदी में निर्मित ईंटों का मन्दिर है इस मन्दिर का वास्तु तो भीतर गांव के मन्दिर के समान है। यह मन्दिर ध्वस्त अवस्था में है वर्तमान समय में केवल इसका केवल गर्भगृह बचा है। इस मन्दिर में भी शिखर तथा मण्डप रहा होगा, जो अब नष्ट हो गया है। गर्भगृह के समक्ष मुखमण्डप था. जिसकी छत टूट चुकी है तथा प्रस्तर स्तम्भ अपने स्थानों पर वर्तमान है। अलंकरण की दृष्टि से गर्भगृह के प्रवेश द्वार के बाजुओं (द्वार– पार्श्व), चौखट आदि शुभाकृतियों एवं अभिप्रायों का अंकन मिलता है।[12] अलिंद तथा स्तम्भयुक्त मण्डप ईंटों की दीवार से घिरा है तथा आलों और भित्ती स्तम्भों से अलंकृत है वहां तक पहुँचने के दो पार्श्वपथ हैं। संपूर्ण रचना एक ऊँची जगती पर स्थित है। गर्भगृह योजना तथा ऊर्ध्वछंद में पंचरथ है जो कृत्रिम द्वारों की सुन्दरता से अलंकृत है तथा शिखर पर लम्बवत् रूप से विस्तृत चौत्यगवाक्षों की तनी पक्तियाँ हैं। मन्दिर का बाह्य भाग बड़े–बड़े आलों और भित्ति स्तंभों, छोटे–छोटे शिखरों व चौत्यगवाक्षों की लंबवत् पंक्तियों से अलंकृत है। आले – जंघा को शिखर से पृथक करते हैं जो उत्कृष्ट नक्काशी के नमूने हैं शिखर का सर्वोच्च अलंकरण नष्ट हो गया है।

4. भूमरा का शिव मन्दिर –

भूमरा का शिव मन्दिर मध्य प्रदेश के सतना जिले में जबलपुर इटारसी रेलमार्ग पर ऊचेहरा रेलवे स्टेशन से 10 किमी0 दूर भूमरा नामक गांव में स्थित है। यह मन्दिर गुप्तकालीन है। इस मन्दिर की खोज कनिंघम ने 1873–74 ई0 में भी थी। उन्होंने इसके स्तम्भों को प्राप्त किया था।[13] इस मन्दिर को प्रकाश में लाने का श्रेय राखलदास बनर्जी को जाता है। इस मन्दिर के अवशेषों से यह पता चलता है कि यह मन्दिर वर्गाकार था जिसकी लम्बाई 35 फुट थी। उसके सम्मुख 19 फीट तथा 19 इंच लम्बा और 13 फीट चौड़ा मण्डप था। यह अब जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है। मण्डप के सम्मुख मध्य में 11 फीट तीन इंच लम्बी, आठ फीट पाँच इंच चौड़ी सीढ़ियां थीं।[14] सोपान के दोनों ओर 8 फीट 2 इंच लम्बी तथा 5 फीट, 8 इंच चौड़ी एक–एक कोठरी थी। मण्डप के सम्मुख मूल वास्तु के भीतर मध्य में 15.50 फीट का वर्गाकार लाल पत्थर का सपाट छत वाला गर्भगृह था, अब केवल गर्भगृह अवशिष्ट है। गर्भगृह के भीतर एकमुखी शिवलिंग स्थापित किया गया है। गर्भगृह के चतुर्दिक प्रदक्षिणापथ रहा होगा।[8] यह मन्दिर नाचना कुठारा के पार्वती मन्दिर से समानता रखता है।

भूमरा के मन्दिर का द्वार स्तम्भ बहुत अलंकृत है। द्वार स्तम्भ में मकरवाहिनी गंगा और कूर्मवाहिनी यमुना की मूर्तियां है। दोनों उकेरी गई मूर्तियाँ अतिशय सुन्दर है। वहीं दोनों मूर्तियों के पास परिचारक के रूप में एक स्त्री–पुरुष अंकित है।[15] स्तम्भ की चौखट सर्वाधिक अलंकृत है। मन्दिर के बहुत से प्रस्तर खण्डों पर वाद्य या कमल आदि उकेरे गए हैं। वास्तु अंकरण की दृष्टि से भूमरा के मन्दिर की दोनों चौखट समान रूप से अलंकृत है। द्वार स्तम्भों तथा सिरदल पर पूर्णघट, पत्रावली, नगरंमुख, व्याघ्रमुख आदि अलंकरण मिलते हैं। वाराह अवतार, नवग्रह द्वार पर अंकित हैं।[16]

5. नाचना कुठारा का पार्वती मन्दिर –

नाचना कुठारा का मन्दिर मध्य प्रदेश के पन्ना जिले में अजयगढ़ के समीप नचना कुठारा नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। कनिंघम इसे पार्वती मन्दिर मानते हैं।[17] राखलदास बनर्जी के अनुसार यह एक शिव मन्दिर है। इस मन्दिर का निर्माण 500–550 ई0 के लगभग हुआ था।

यह मन्दिर अपने मूल रूप में बहुत कुछ सुरक्षित है। यह मन्दिर एक ऊँची कुर्सी पर बना है और इसके गर्भगृह के चारों ओर प्रदक्षिणापथ को ऊपर आच्छादित कर दिया गया है। इस मन्दिर के निर्माण को देखकर बौद्ध चौत्यशालाओं का स्मरण हो जाता है, जिनमें गर्भगृह को ऊँची कुर्सी पर दिखाने की परम्परा थी। इस मन्दिर का गर्भगृह भीतर से वर्गाकार 8 फीट और बाहर 15 फीट है। इसका प्रदक्षिणापथ भीतर से 26 फीट और बाहर से 33 फीट है। इसके सम्मुख का मण्डप 26 फीट लम्बा और 12 फीट चौड़ा है। उसके सामने मध्य में 18 फीट लम्बी और 10 फीट चौड़ी सीढ़ी है। गर्भगृह की छत सपाट है और उसके ऊपर एक कोठरी है। इस कोठरी की छत भी सपाट है। गर्भगृह में प्रकाश डालने के लिए अगल–बगल की दीवारी में एक–एक गवाक्ष है, जिसमें चौपहल छेद है। इसी प्रकार का गवाक्ष बाहरी दीवारों में भी है।[18] प्रदक्षिणा–पथ भी बाहरी दीवार तीन और मध्य में कुछ निकली हुयी है। प्रदक्षिणा पथ का सर्वप्रथम एवं स्वतन्त्र निर्माण नचना के पार्वती मन्दिर में किया गया है। इसमें प्रदक्षिणा पथ की पृथकतः छत भी निर्मित है। यह गर्भगृह के चारों ओर बनी है। गर्भगृह में वातायन की सुविधा हेतु जालीदार खिड़की बनाई गई हैं। ये खिड़किया प्रदक्षिणा पथ की दीवार से लगी है। इन खिड़कियों पर गुप्त काल के विशेषकला अभिकल्प जैसे बल्लरी, कीर्तिमुख, श्रीवृक्ष, नाचते बौने गण और स्त्री आकृतियाँ आदि अंकित हैं। गर्भगृह का प्रवेश द्वार मूर्तियों एवं अन्य अलंकरणों से सुसज्जित किया गया है। इसकी शाखाओं पर मिथुन का अंकन हुआ है। निचले भाग में एक ओर मकरवहाहिनी गंगा तथा दूसरी ओर कूर्मवाहिनी यमुना का अंकन देखने को मिलता है। मन्दिर की दीवारें भी विभिन्न प्रकार के अलंकरण से सजायी गयी है।[19]

6. देवगढ़ का दशावतार मन्दिर –

देवगढ़ उत्तर प्रदेश में ललितपुर जनपद में उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा पर बेतवा नदी के दाएं किनारे पर स्थित है। वास्तु एवं मूर्ति शिल्प की दृष्टि से यह मन्दिर 600 ई0 का निर्धारित किया जा सकता है। पर्सी ब्राउन के मतानुसार देवगढ़ का यह मन्दिर अपनी पूर्व अवस्था में असाधारण रूप में श्रेष्ठ है।

देवगढ़ का दशावतार मन्दिर उच्चश्रेणी का कला प्रोढ कार्य तथा अतीव गौरवमय परिमार्जन के गुणों से युक्त गुप्तकाल की सर्वश्रेष्ठ कृति माना गया है। पिरामिडाकार शिखर से युक्त यह मन्दिर 40 फीट के लगभग ऊँचा रहा होगा। देवगढ मन्दिर साढ़े पैतालिस फीट वर्गाकार में लगभग पाँच फीट ऊँचे जगती पीठ (चबूतरा) के मध्य में विनिर्मित था। जगतीपीठ के चतुर्दिक साढ़े पन्द्रह फीट लम्बी सीढ़ियां हैं। प्रत्येक कोने पर एक–एक उप–मन्दिर होने के कारण यह पंचायतन प्रकार का मन्दिर है। चबूतरे पर भित्तिस्तम्भों के मध्य राम तथा कृष्ण से सम्बन्धित दृश्य उत्कीर्ण है। त्रिरथ गर्भगृह के तीन ओर की सादी दीवारों पर उभरे हुए फलक हैं। प्रत्येक में बड़ेरियो तथा भित्ति स्तम्भों की संरचना में सुन्दर आकृतियाँ उत्कीर्ण है, जिनमें शेषशायी विष्णु गजेन्द्र–मोक्ष और नारायण की तपस्या की झांकी अंकित है। इसका शिखर, जिसका कुछ अंश सुरक्षित है. संभवतः ऊर्ध्व–छंद में कोणाकार था तथा मुख्य रूप से चौत्य खिड़कियों में

सुशोभित था। देवगढ़ मन्दिर राम और कृष्ण की उन कथाओं को प्रस्तुत करने वाला सर्वप्रथम मन्दिर है, जिन्होंने सभी कालों में भारतीय कलाकारों को प्रभावित किया। इस मन्दिर के केवल कुछ ही फलक, जो चबूतरे से पृथक हैं, सुरक्षित है। इनमें से 10 राम की तथा 2 कृष्ण की कथाओं से संबंधित फलक हैं। फलकों में से एक में अहिल्या का चित्रण है। शाप के कारण पत्थर में परिवर्तित अहिल्या राम के पैरों के पुण्य स्पर्श से अपना मानव रूप पुनः प्राप्त करती हुई दिखाई गयी है। दूसरे फलक में लक्ष्मण ने रावण की बहन शुपर्णखा की नाक, उसके कामुख प्रस्ताव रखने की घृष्टता के कारण काट रहे हैं। तीसरे फलक में हनुमान उन जड़ी–बूटियों के सहित पर्वत को ला रहे हैं. जिनमें लक्ष्मण का रावण के पुत्र मेघनाद द्वारा पहुँचायी गयी प्राणघातक चोट लगने पर, उपचार किया गया था। कृष्ण–लीला के दो दृश्यों में से एक में कृष्ण को गाड़ी उलटते हुए अलौकिक शिशु के रूप में प्रदर्शित किया है, जबकि दूसरे में नंद और यशोदा कृष्ण और बलराम के शिशु रूप का आलिंगन करते हुए चित्रित किये गये हैं। यशोदा ने आभिर वस्त्र पहने हैं जो अब दिल्ली और हरियाणा क्षेत्र की देहाती स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों से साम्य रखते हैं।

इस मन्दिर का वैशिष्ट्य यह है कि जहाँ अन्य मन्दिरों की छतें चपटी हैं, वहीं इसमें एक शिखर मिलता है और जहाँ अन्य मन्दिरों में केवल एक मण्डप है, वहाँ देवगढ़ में चार मण्डप मिलते हैं और प्रत्येक की छतें चपटी है। ये मण्डप गर्भगृह के चारों दिशाओं में वर्तमान हैं। गर्भगृह में चार द्वार हैं। देवगढ़ मन्दिर के द्वार का छः पट्टियों पर लतापत्र का दो भिन्न रूपों में अंकन है तीसरी पट्टी में अनेक प्रकार के मानव युग्मों का अंकन किया गया है। चौथी पट्टी अर्धस्तम्भ के रूप में है, जो अनेक भागों में विभाजित तथा प्रत्येक भाग पृथक–पृथक ढंग से सज्जित है। इसके पश्चात् एक पतली गहरी पट्टी है और उसके बाद पुनः अर्धस्तम्भ है, जिस पर विभिन्न ढंग के अलंकरण है। इन सभी पट्टियों के निचले भाग में बड़े आकार में द्वारपाल और द्वार पालिकाएं (प्रतिहारी) अंकित है। बाहरी अर्द्धस्तम्भ के ऊपर एक ओर गंगा और दूसरी ओर यमुना का अंकन है। सिरदल के उस अंश में जो बाजुओं की भीतरी तीन पट्टियों के क्रम में है, उन्हीं के अलंकरणों का विस्तार है, जिनमें मानव मुख–युक्त गवाक्ष है। उसके ऊपर बाजुओं के बाहरी अर्धस्तम्भ के क्रम में ही अलंकरण है उन सबके ऊपर सिंह मुख की पाँत चली गयी है। नीचे जगतीपीठ के चारों ओर रामायण और कृष्ण चरित्र आदि के दृ श्यों का अलग–अलग फलकों पर अंकन है।

दशावतार मन्दिर के ललाट–बिम्ब पर शेषशायी विष्णु की प्रतिमा उत्कीर्ण है। मन्दिर की पश्चिम दिशा में प्रस्तर निर्मित बावली स्थित है। मन्दिर की उत्तरी देवकुलिका में गजेन्द्र मोक्ष की कथा का अंकन है। इस कथा में पानी पीने आया हाथी नाग द्वारा पकड़ लिए जाने पर चीत्कार कर रहा है अपने भक्त द्वारा इस तरह स्मरण कराने पर उसे मुक्त कराने हेतु गरूड़ पर आरूड होकर विष्णु जी पधारे। विष्णु जी इतने शीघ्रता से आये कि वे अपना मुकुट ले जाना भूल गए, जिसे लेकर विद्याधर युगल उड़ते हुए आ रहे हैं। नाग राजा तथा रानी हाथ जोड़ कर विष्णु से क्षमा याचना कर रहे हैं। पूर्वी देवकुलिका में नर–नारायण का अंकन किया गया है। दोनों बदरिकाश्रम में पृथक–पृथक शिलाखण्डों पर बैठे हुए हैं। दाईं ओर नारायण अपने ज्ञान का प्रकाश नर रूपी अवतार को दे रहे हैं। हिरन और शेर को एक साथ दिखाकर तपोवन का आभास किया गया है। मन्दिर की दक्षिणी देवकुलिका में शेषशायी विष्णु शेषनाग के सहस्र फणों की छाया में लेटे हुए हैं। लक्ष्मी जी विष्णु जी का पैर दबा रही हैं। ऊपर ब्रह्मा जी विकसित कमल पर विराजमान हैं फलक में दाहिनी ओर इन्द्र, वरुण और कार्तिकेय दृष्टव्य हैं।

चबूतरे पर भित्ति–स्तम्भों के मध्य राम तथा कृष्ण से सम्बन्धित दृश्य उत्कीर्ण है। त्रिरथ गर्भगृह के तीन ओर की सादी दीवारों पर उभरे हुए फलक हैं। प्रत्येक में बड़ेरियो तथा भित्ति–स्तम्भों की संरचना में सुन्दर आकृतियों उत्कीर्ण है, जिनमें शेषशायी विष्णु, गजेन्द्रमोक्ष और नारायण की तपस्या की झांकी अंकित है। इसका शिखर, जिसका कुछ अंश सुरक्षित है, संभवतः ऊर्ध्व–छंद में कोणाकार था तथा मुख्य रूप से चौत्य खिड़कियों में सुशोभित था । देवगढ़ मन्दिर राम और कृष्ण की उन कथाओं को प्रस्तुत करने वाला सर्वप्रथम मन्दिर है, जिन्होंने सभी कालों में भारतीय कलाकारों को प्रभावित किया। इस मन्दिर के केवल कुछ ही फलक, जो चबूतरे से पृथक हैं, सुरक्षित है। इनमें से 10 राम की तथा 2 कृष्ण की कथाओं से संबंधित फलक हैं। फलकों में से एक में अहिल्या का चित्रण है। शाप के कारण पत्थर में परिवर्तित अहिल्या राम के पैरों के पुण्य स्पर्श से अपना मानव रूप पुनः प्राप्त करती हुई दिखाई गयी है। दूसरे फलक में लक्ष्मण ने रावण की बहन शुपर्णखा की नाक, उसके कामुख प्रस्ताव रखने की पृष्टता के कारण काट रहे हैं। तीसरे फलक में हनुमान उन जड़ी–बूटियों के सहित पर्वत को ला रहे हैं, जिनमें लक्ष्मण का रावण के पुत्र मेघनाद द्वारा पहुँचायी गयी प्राणघातक चोट लगने पर, उपचार किया गया था कृष्ण लीला के दो दृश्यों में से एक में कृष्ण को गाड़ी उलटते हुए अलौकिक शिशु के रूप में प्रदर्शित किया है, जबकि दूसरे में नंद और यशोदा कृष्ण और बलराम के शिशु रूप का आलिंगन करते हुए चित्रित किये गये हैं। यशोदा ने आभिर वस्त्र पहने हैं जो अब दिल्ली और हरियाणा क्षेत्र की देहाती स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों से साम्य रखते हैं।[20]

7. कुण्डा का शंकरमढ़ का मन्दिर –

यह मन्दिर मध्यप्रदेश के जबलपुर जिले में तिगवा नामक स्थान से लगभग 5 किमी0 दूर कुण्डा नामक ग्राम में स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण 350 ई० में हुआ था। यह लाल पत्थर से निर्मित शिव मन्दिर है। मन्दिर का निर्माण पत्थर की लम्बी पाटियों को रख कर किया गया है। स्थानीय लोग इसे शंकरगढ़ के नाम से जानते है। यह एक छोटी–सी कोठरी मात्र है, जो भीतर से वर्गाकार है। भीतर से यह 5 फुट 7 इंच लम्बा और 5 फुट 10 इंच चौड़ा है। बाहर से यह 10 फुट 8 इंच लम्बा और 10 फुट 10 इंच चौड़ा है। इस मन्दिर की छत सपाट है मन्दिर में मूल रूप से मण्डप नहीं था लेकिन बाद में एक मण्डप जोड़ दिया गया, परन्तु यह मण्डप भी अब नष्ट हो चुका है।[21]

8. मुकुन्द दर्रा मन्दिर –

यह मन्दिर राजस्थान के कोटा जिले में एक पहाड़ी दर्रे के भीतर स्थित है। इस पहाड़ी दर्रे को मुकुन्द दर्रा के नाम से जाना जाता है। यह मन्दिर लाल पत्थर से निर्मित है। इस मन्दिर की छत सपाट है। यह मन्दिर 44X74 फुट की जगती पर बना है। अपनी सादगी के कारण यह मन्दिर निम्न कोटि में आता है। इस मन्दिर के गर्भगृह और मण्डप का निर्माण चार चौपहल स्तम्भों पर हुआ है। मण्डप से लगभग 3.75 फुट हटकर तीन और दो–दो अर्द्धस्तम्भ हैं जिनके ऊपर शीर्ष

एवं इन पर सिर दल है। सिरदल पर कमल अंकित चौकोर पत्थर रखे हुए हैं। मुख्य मण्डप के चारों ओर एक चौड़ा प्रदिक्षापथ है प्रदिक्षणापथ के स्तम्भों के अर्द्ध स्तम्भों से 2 फुट 2 इंच के अन्तर पर तीन ओर 16 इंच ऊँची पत्थर की चाहरदीवारी है। इस चाहरदीवारी से 18 फुट हटकर पूरब की ओर सम्भवतः चार स्तम्भों पर खड़ा हुआ एक छोटा मण्डप और था।[22]

9. तिगवा का विष्णु मन्दिर –

यह मन्दिर मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में तिगवा नामक ग्राम में स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण लगभग सातवीं सदी के प्रारम्भ में हुआ था। यह पत्थर का बना 12 फुट 9 इंच का वर्गाकार मन्दिर है। इसकी छत सपाट है, जिस पर भीतर फुल्लकमल का अंकन है। इसका गर्भगृह लगभग आठ फुट का है जिसके सामने चार स्तम्भों पर खड़ा लगभग सात फुट का एक छोटा मण्डप है। इस मन्दिर के स्तम्भ काफी अलंकृत हैं। स्तम्भों की तरह द्वार भी अलंकृत है उसके अगल–बगल में अर्धस्तम्भों का अंकन हुआ है। गर्भगृह के प्रवेशद्वार के स्तम्भों पर कूर्मवाहिनी यमुना और मकरवाहिनी गंगा की आकृतियां उत्कीर्ण हैं।

10. रामगढ़ का मुण्डेश्वरी मन्दिर –

यह मन्दिर बिहार के शाहबाद जिले में रामगढ़ की पहाड़ी के शिखर पर स्थित है। इस मन्दिर की खोज सर्वप्रथम ब्लाक ने 1902–03 में की थी। यह मन्दिर अन्य मन्दिरों से भिन्न है तथा अठपहल है। यह मन्दिर बाहर से 40 फुट है तथा इसकी दीवार की मोटाई 10 फुट है। इसमें चारों दिशाओं में चार दरवाजे थे जिनमें से अब पूर्व की ओर का दरवाजा ईंटों की जाली से चुना हुआ है। दरवाजों के चौखट बेलबूटों से विस्तृत रूप से सजाये हुए हैं और बाजुओं के नीचे दोनों ओ मूर्तियाँ हैं। दक्षिण वाले द्वार के अगल–बगल द्वारपाल, पश्चिम वाले द्वार के अगल–बगल गंगा–यमुना और उत्तर के द्वार के एक ओर दुर्गा और दूसरी ओर कोई अन्य देवी का मूर्तन है। मुख्य द्वार के सामने स्तम्भों पर खड़ा एक मण्डप था।

11. उदयपुर का मन्दिर –

यह मन्दिर मध्य प्रदेश में विदिशा से उत्तर में लगभग 55 किमी0 दूर उदयपुर नामक स्थान पर स्थित है। इस मन्दिर का गर्भगृह छोटा है और इसका स्वरूप वर्गाकार है। गर्भगृह के सामने एक मण्डप है। इस मन्दिर में विशेष अलंकरण देखने को नहीं मिलता है। अलंकरण के नाम पर बाहर तीन पतली पाँतें हैं, जिन पर ईंटे कटी हुई हैं।

12. पवाया का मन्दिर –

यह मन्दिर मध्य प्रदेश के ग्वालियर में पवाया नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। यह ईंटों से निर्मित वर्गाकार मन्दिर है। सम्भवतः यह विष्णु मन्दिर था। यह मन्दिर तीन मंजिलों वाला है तथा इसकी सबसे नीचे की मंजिल ठोस एवं सादी है। ऊपर की दो मंजिलों का बाहरी भाग कई फलकों एवं अर्द्ध स्तम्भों के अलंकृत था और ऊपरी भाग में गवाक्षों की पंक्ति थी।

13. खोह का मन्दिर –

यह मन्दिर मध्य प्रदेश के नागोद रियासत में खोह नामक स्थान पर स्थित है। यह मन्दिर एक चबूतरे पर निर्मित है। इस मन्दिर में एक मुखी शिवलिंग स्थापित है। इसके अतिरिक्त इस मन्दिर में कुछ शिवगणों की मूर्तियाँ थी। मन्दिर के गर्भगृह के प्रवेश द्वार पर गंगा और यमुना की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं।

14. कहांव का मन्दिर –

यह मन्दिर पूर्वी उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के कहांव ग्राम में स्थित है। बुकानन ने यहां से दो ध्वस मन्दिर के अवशेष देखे गये थे। इन्होंने इस मन्दिर को एक के ऊपर एक कोठरी के रूप में पाया। यह मन्दिर भीतर गांव और बोध गया के मन्दिर से समानता रखता है कनिंघम को यहां केवल एक मन्दिर का छेदन देखा था। यह मन्दिर 12.5 फुट का वर्गाकार मन्दिर है। इसका गर्भगृह 9 फुट का है और इसकी दीवार 1.5 फुट मोटी है

15. एरण के मन्दिर –

मध्य प्रदेश के सागर जिले में एरण नामक स्थान पर गप्तकाल के तीन मन्दिर प्रकाश में आये हैं– नृसिंह मन्दिर, वराह मन्दिर तथा विष्णु मन्दिर इन मन्दिरों को कनिंघम महोदय ने प्रकाश में लाया था।

नृसिंह मन्दिर

कनिंघम महोदय को इस मन्दिर का केवल सामने का भाग ही सुरक्षित मिला था। मन्दिर के अवशेषों के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि यह मन्दिर 12.5 फुट लम्बा और 8.75 फुट चौड़ा था। इस मन्दिर का निर्माण एक ऊँचे चबूतरे किया गया था। इस मन्दिर के गर्भगृह में नृसिंह की 7 फुट ऊँची प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई थी। इसके गर्भगृह के सामने एक सभा मण्डप था जो चार स्तम्भों पर टिका हुआ था।'

वराह मन्दिर

वराह मन्दिर का गर्भगृह 31 फुट लम्बा और 15.5 फुट चौड़ा था। गभगृह के सामने 9 फुट का एक चौड़ा मण्डप था, जिसकी दीवार की मोटाई 2.5 फुट थी। इस मन्दिर के स्तम्भ कलात्मक हैं। इस मन्दिर के मण्डप के स्तम्भ का शीर्ष नहीं मिलता। इसको छोड़कर स्तम्भ की ऊंचाई 10 फुट है तथा उसका चौकोर तल वर्गाकार है, जो 2 फुट 4 इंच का है। स्तम्भ नौ खण्डों में विभाजित है और प्रत्येक का अपना अलंकरण है। ऊपरी भाग में जंजीर से लटकते हुए घंटे उत्कीर्ण किये गये हैं। इसके ऊपर उल्टा कमल घट है और इसके ऊपर लतापत्र युक्त कुंभ है ऐसा ही कुम्भ सम्तम्भ के नीचे भी है। इसके ऊपर एक बैठकी में दो गुथे हुए सर्प हैं और चार कोनों पर घुटने के सहारे खड़ी चार मानव आकृतियाँ हैं। गुथे हुए सर्प इन मानव आकृतियों के बीच दिखाये गये हैं। इसके ऊपर एक चौकोर बैठक है, जो दो भागों में विभक्त है। इस मन्दिर में भगवान वष्णु के वाराह अवतार की मूर्ति है, जिसकी ऊँचाई 11 फुट और 2 इंच, लम्बाई 13 फुट और 10 फुट तथा चौड़ाई 5 फुट 1.5 इंच है। इस मूर्ति पर हूण शासक तोरमाण के शासनकाल के प्रथम वर्ष का एक लेख प्राप्त हुआ है, जिससे यह ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र के सामंत मातृविष्णु के छोटे भाई धान्य विष्णु ने इस मन्दिर का निर्माण करवाया था।

विष्णु मन्दिर

वराह मन्दिर के उत्तर में एक विष्णु मन्दिर के अवशेष प्राप्त हुए है। इसके गर्भगृह में 13 फुट और 2 इंच ऊँची विष्णु की प्रतिमा प्रतिष्ठित थी। इस मन्दिर का स्वरूप आयताकार था और सामने के भाग में मण्डप था। इस मन्दिर का आकार बाहर से लगभग 32 फुट लम्बा तथा 13 फुट चौड़ा था। इसका मण्डप दो स्तम्भों पर टिका हुआ था ये स्तम्भ अत्यधिक अलंकृत है ये स्तम्भ अपने यथास्थान पर सुरक्षित अवस्था में खड़े हैं। मन्दिर के गर्भगृह की दीवारें गिर गई हैं, परन्तु इसका इसका द्वार सुरक्षित अवस्था में है। यह द्वार अलंकृत है। द्वार के ललाट सिर दल के बीच में गरूड़ की आकृति बनी हुई है। द्वार में तीन शाखायें हैं। भीतरी भाग सर्प कुण्डलियों से अलंकृत हैं। बीच में पुष्प का अंकन किया गया है और किनारे पर पंक्तियां अंकित हैं। निचले भाग में गंगा तथा यमुना का अंकन देखने को मिलता है। मन्दिर की छत सपाट है। छत और मण्डपों के स्तम्भों के बीच के भाग में अलंकरण की एक पट्टी है। इस मन्दिर के मण्डप के स्तम्भों का अलंकरण वराह मन्दिर के समान ही है, परन्तु स्तम्भों की बैठकी में सबसे ऊपर के भाग में वृक्षयुक्त सिंह का अंकन किया गया है। स्तम्भ के मध्य भाग का अलंकरण भी अन्य मन्दिरों के स्तम्भों से भिन्न देखने को मिलता है।

सन्दर्भ –

1. गुप्त, परमेश्वरी लाल, भारतीय वास्तुकला, वाराणसी, पृ0 67
2. यादव, रूदल प्रसाद, प्राचीन भारतीय वास्तुकला, पृ0 76–77
3. श्रीवास्तव, ए० एल०. भारतीय कला, इलाहाबाद, पृ० 128
4. चरण चौकी मन्दिर के आधार में उच्च चबूतरा होता है।
5. पाद द्रविड़ मन्दिरों में अधिष्ठान के ऊपर एवं छज्जे के नीचे दीवार का भाग होता है।
6. जंघा गर्भगृह का लम्बवत् भाग होता है।
7. विष्णुधर्मोत्तर पुराण में भित्ति या जंघा को ही कटि कहा गया है।
8. शिखर के सर्वोच्च तथा आमलक के ठीक नीचे का भाग।
9. शिखर का शीष भाग–आमलक, कलश
10. बौद्ध चौत्य गुम्बद की भाँति कपोत या शिखर पर खिड़की कभी–कभी शिखर के ऊपर चारों दिशाओं में इसका विस्तार होता है जिसे शुकनामा या महानासिका कहा गया है
11. गर्भगृह की लम्बवत् दीवार के ऊपर मन्दिर का पर्वतकार भाग
12. गुप्त, आर0 के0 प्राचीन भारत में समाज, धर्म कला एवं वास्तुकला, जयपुर, पृ० 109
13. श्रीवास्तव, उपरोक्त, पृ० 128
14. कृष्णदेव, उत्तर भारत के मन्दिर, नई दिल्ली, 2005, पृ० 3
15. गुप्त, आर0 के0 प्राचीन भारत में समाज, धर्म कला एवं वास्तुकला, जयपुर, पृ० 109
16. कृष्णदेव, उपरोक्त, पृ० 3
17. यादव, रूदल प्रसाद, उपरोक्त, पृ0 84
18. गुप्त, श्याम, प्राचीन भारतीय वास्तुकला, वाराणसी, पृ0 87
19. शर्मा, श्याम, प्राचीन भारतीय कला, वास्तुकला एवं मूर्तिकला, नई दिल्ली, पृ0 136
20. सिंह, अरविन्द कुमार, भारतीय वास्तु तथा कला के मूल तत्व, मध्य प्रदेश, पृ0 81
21. श्रीवास्तव, उपरोक्त, पृ० 135
22. वाजपेयी, कृष्णदत्त भारतीय वास्तुकला का इतिहास, लखनऊ, पृ० 114